भारतीय समाज की समस्याएँ और प्रेमचंद

जितेन्द्र श्रीवास्तव

भारतीय समाज की समस्याएं

और

प्रेमचंद

जितेंद्र श्रीवास्तव

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जून, 2022

© जितेंद्र श्रीवास्तव

प्रातः स्मरणीय पिता जी के

मनुष्यधर्मी स्वप्नों को

याद करते हुए

मां, भाभी, रजत, साहिल और पुरवा बेटे,

के लिए

अनुक्रम

भूमिका

ढाई आखर प्रेम का 4

स्त्री-समस्या और प्रेमचंद

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं 8

छूत-अछूत समस्या और प्रेमचंद

मुई खाल की सांस सो सार भसम होय जाय 37

हिंदू-मुस्लिम समस्या और प्रेमचंद

रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय 72

किसान समस्या और प्रेमचंद

हिया जरत राहत दिन-रैन 101

'गोदान' और 'राम की शक्तिपूजा': कुछ समस्याएँ

धन्ये, मैं पिता निरर्थक 121

भूमिका

ढाई आखर प्रेम का

भारतीय समाज में स्त्रियों की समस्याएँ हों चाहे दलितों की, किसानों की समस्याएँ हों चाहे साम्प्रदायिकता की-प्रेमचन्द ने सब पर गम्भीरता से विचार किया है। यह देखने की बात है कि वे अकेले ऐसे लेखक-चिन्तक हैं, जिन्होंने अपने समय की समस्याओं पर विचार करते हुए भविष्य के विषय में जो बातें लिखीं, वे बहुत हद तक सत्य सिद्ध हुईं और हो रही हैं। उन्होंने बहुत गहराई में जाकर स्त्री-समस्या, छूत-अछूत की समस्या, हिन्दू-मुस्लिम समस्या और किसान-समस्या पर विचार किया है। इनके विषय में समाज और सरकार के व्यवहार के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए उन्होंने इनके निदान का रास्ता भी बताया है। कहने की आवश्यकता नहीं कि आज भी ये समस्याएँ मुँह बाये खड़ी हैं और प्रेमचन्द के साहित्य की प्रासंगिकता बहुत बढ़ गई है।

यहीं यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि प्रेमचन्द के कथा-साहित्य पर बहुत लिखा गया है, लेकिन उनके कथा-साहित्य से इतर के गद्य साहित्य पर बहुत कम। इस पुस्तक में उनके ऐसे ही गद्य को आधार बनाया गया है। बीच-बीच में कथा-साहित्य से भी सहयोग लिया गया है। अध्ययन की सुविधा के लिए इस पुस्तक में भूमिका को लेकर छ: अध्याय बनाए गए हैं। प्रत्येक अध्याय का एक उपशीर्षक भी है, जो कि सम्बन्धित विषय की भावना से जुड़ा है। इस पुस्तक में यह कोशिश की गई है कि विमर्श के लिए उठाए गए प्रश्नों के सन्दर्भ में प्रेमचन्द का उचित मूल्यांकन हो सके।

अब यह पुस्तक कैसी बनी है, यह तो सुधीजन ही बताएँगे। लेकिन इस पुस्तक को लिखते हुए जिनका सहयोग और स्नेह मुझे मिला, उनमें गुरुवर्य प्रो. मैनेजर पाण्डेय के प्रति मैं श्रद्धावनत हूँ। मैं गुरुवर प्रो. केदारनाथ सिंह, प्रो. परमानन्द श्रीवास्तव, डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल और डॉ. वीरभारत तलवार का भी आधारी हूँ जिनका शिष्य बनकर मैंने बहुत कुछ पाया। मैं याद करना चाहता हूँ डॉ. देवेन्द्र चौबे जैसे शिक्षक को, जिन्होंने बराबर बड़े भाई की तरह मेरा मार्ग दर्शन किया है। बड़े भाई जैसे ज्योतिष जोशी, प्रणय कृष्ण, आशुतोष कुमार, गोपाल प्रधान और मित्र कुमार कौस्तुभ, दीपक, प्रशान्त, भरत एवं जयप्रकाश के साथ जे. एन. यू के उन सभी मित्रों-शुभचिन्तकों का भी आभारी हूँ, जिनसे बराबर बल मिला है।

इस पुस्तक में संग्रहित सामग्री को लेखों के रूप में प्रकाशित करके प्रेमचन्द साहित्य संस्थान के निदेशक प्रखर कवि-समीक्षक भाई सदानन्द शाही और 'अभिनव कदम' के सम्पादक वरिष्ठ कवि भाई जयप्रकाश धूमकेतु ने मेरा मनोबल बढ़ाया, इसके लिए मैं उनका आभार व्यक्त करना जरूरी समझता हूँ। इस पुस्तक का आखिरी अध्याय बिहार की एक पत्रिका 'कला' में स्वतन्त्र लेख के रूप में प्रकाशित हुआ था। इसके लिए 'कला' के सम्पादक भाई कलाधर को बहुत-बहुत धन्यवाद।

ये बातें अधूरी रह जाएँगी यदि मैं अपने बड़े भाई श्री ज्ञानेश्वर लाल श्रीवास्तव और छोटे भाई आनन्द के साथ अपनी पत्नी श्यामली और पुत्री साक्षी को न याद करूँ। इन लोगों और इनके साथ-साथ पितातुल्य डॉ. देवेन्द्रनाथ वर्मा और बड़े भाई समान वरिष्ठ

कवि स्वप्निल श्रीवास्तव का स्नेहिल दबाव न होता तो शायद मेरा आलस्य इस काम को भविष्य के लिए टरका देता।

जितेन्द्र श्रीवास्तव

सिलहटा, देवरिया

15 अगस्त, 2002